रि
रिकॉर्ड:- महफिल मे जल उठी.... ओम् शान्ति: प्रातःक्लास 20-9-1967

रुहानी बाप रुहानी बच्चो को श्रीमत देते है।जब कोई की चलन अच्छी नही होती है तो मां, बा, कहते है कि शल्ला ईश्वर तुमको अच्छी मत दें। विचारो को यह तो पता ही नही कि ईश्वर सच्च-मुच मत देते है! कब देते है? अब तुम बच्चो को तो ईश्वरिय मत मिल रही है। अर्थात रुहानी बाप रुहानी बच्चो को श्रेष्ट मत दे रहे है। श्रेष्ट बनेन के लिये। अभी तुम समझते हो कि हम श्रेष्ट ते श्रेष्ट बन रहे है। बाप हमको कितनी ऊंच मत दे रहे है।हम उनकी ही मत पर चल कर मानुष से देवता बन रहे है। तो सिध होता है कि मनुष्य को देवता बनाने वाला वो ही बाप है। सिख लोग भी गाते है कि मानुष से देवता किये....। तो जरुर मनुष्य से देवताबनाने की मत देते होगें। उनकी महिमा भी गाते है एक ओंकार कर्ता... निर्भय.. तुम एसी निर्भय हो जाते हो। आत्मा की अवस्था [illegible] हो गयी। आत्मा को कोई भी भय नही रहता है। बाप कहते है कि निर्भय बनो तो डर वा भय फिर भी किस बात का? यह तो शास्त्रो मे कहानी लिख दी हेहै कि लडाई हुई फिर एक भाई ने सभी अगों पर हाथ फिराया, लज्जा के मारे एक अंग पर हाथ नही फेर सकी फिर उसको ही गदा मारी ... यह सब है दण्ड कथायें। मारने आद की तो कोई बात ही नही ह है। तुमको कोई भय नही। तुम तो अपने घर पर बैठे भी बाप की श्रीमत लेते रहते हो। अब श्रीमत किनकी कौन देते है, यह बाते गीता मे तो है ही नही। अभी तुम बेहद समझते हो। बाप कहते है कि तुम पतित बन गये हो। अभी पावन बनने लिये मामेकम् याद करो। यह मेला है पुरुषोत्तम बनेन लिये संगम युग का। [illegible] आकर श्रीमत लेते है। इसको ही कहा जाता है ईश्वर के साथ बच्चो का मेला। ईश्वर भी निराकार तो बच्चे(आत्मायें) भी निराकार।हम आत्मा है यह पक्की-2 आदत डालनी है। जैसे खिलौने को चाबी दी जाती है तो डांस करने लगता है। तो आत्मा भी इस शरीर रुपी खिलौने की चाबी है। अगर आत्मा इसमे नही हो तो कुछ भी कर नही सके2 तुम हो चेतन खिलौने। खिलौने को चाबी नही दी जाव तो काम का नही रहेगा। खडा हो जावेगा। आत्मा भी चेतन चाबी है और यह अविनाशी चेतन चाबी है।बाप समझाते हैकि मै तो देखता ही हूं आत्मा को! आत्मा सुनती है। यही पक्की टेव डालनी है। इस चाबी बिना तो शरीर चल ही नही सके। इसको यह चाबी अविनाशी मिली हुई है। 5000वर्ष इस चाबी को लगते है फिरने में। चेतन चाबी होने कारण चक्र फिरता ही रहता है। यह है चेतन खिलोना बाप भी चेतनात्मा है। जब फिर चाबी खलास हो जाती है तो फिर बाप नेये रीत युक्ति बताते है कि मुझे याद करो तो चाबी फिर से चाबी लग जावेगी। अर्थात आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेगी। जैसे मोटर मे से पेट्रोल खतम होने पर फिर से भरा जाता है नां। अब तुम्हारी आत्मा समझती है कि हमारे मे पेट्रोल कैसे भरा जावेगा। बेटरी खाली होती है तो फिर से उसमे लाईट भरी जाती है नां। बेटरी खाली होती है इतना ही कि लाईट रक्त हो जाती है। अब तुम्हारी आत्मा रुपी बेटरी भी भरती हैजितना याद करेगें उतना-2 पावर भरती जावेगी। इतना 84जन्मो को चक्र लगाय कर बेटरी खाल हो गई है। सतो रजो तमो मे आये हो। अब फिर बाप आया है चाबी देने । अथवा बैटरी को भरने। पावर नही है तो मनुष्य कैसे बन्दर मिसल बन जाते है। तो अब याद से बैटरी को भरना है। बाप कहते है कि मेरे साथ योग लगाओ। यह ज्ञान तो एक बाप देते है। सदगति दाता तो वो एक ही बाप है। अभी तुम्हारी बैटरी पुरी भरती है जो कि फिर पूरे 84जन्म लेती है। जैसे शोभा मे कठपुतलियां नाचती है नांतुम आत्मायें भी वैसे ही कठपुतलियों के मिसल ऊपर से उतरते-2 5000वर्ष मे एकदम नीचे ही आ जाते हो। फिर बाप आकर ऊपर चढाते है। बाप और समझाते है चढ़ती कला और उतरती कला का। 5000वर्ष की बात है। तुम समझते हो कि श्रीमत से हमको चाबी मिल रही है। हम पूरे सतोप्रधान बन जावेगें। फिर सारा पार्ट रिपीट करेगें कितनी सहज बाते है समझने और समझाने की। फिर भी बाप कहते है कि समझेगें तो वो ही जिन्होने कि कल्प पहले भी समझा

होगा। तुम कितना भी माथा मारो जास्ती तो वो समझेंगे ही नही। बाप समझ तो सभी को एक ही देते है. कहां पर भी बैठे हो बाप को ही याद करना है। भले सामेन ब्राहम्णी नही बैठी हो तो भी तो तुम बैठ सकते हो। पता है कि बाप की याद से ही हमारे तो विकर्म विनाश होगें। तो उसी याद मे बैठ जाना होता है। कोई को भी बिठलाने की दरकार नही है। खाने पीने स्नान आद करते हुवे बाप को याद करना है। थोडा समय के लिय दुसरा भी कोई सामेन बैठ जाते है, ऐसे नही कि वो कोई तुमको मदद करते है। नही। हर एक को अपेन को ही मदद करनी है। ईश्वर ने तो मत दी है कि ऐसे-2 बीरो तो तुम्हारी दैवी बुधी बन जोवगी। यह ऊंच टेशन दी जाती है। श्रीमत तो सभी को देते ही रहते है। इतना तो जरू है कि कि किनकी तो आत्मा ठंण्डी हैं तो किनकी तेज है। पावर फुल्ल के साथ योग नही लगता है तो बैटरी भरती नही है बाप की श्रीमत नही मानते है। योग लगता ही नही है। तुम अभी फील तो करते हो नां कि हमारी बैटरी भरती जाती है। तमोप्रधान से सतोप्रधानतो जरूर बनना ही है। इस समय तुमको परमात्मा की श्रीमत मिल रही है यह तो दुनियां बिलकुल ही नही समझती है। बाप कहते है कि मेरी इसी मत से तुम देवता बन जाते हो। इसेस ऊंची चीज तो कोई भी हो नही सकती है। वहां पर यह ज्ञान नही रहता है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। तुमको पुरुषोत्तम बनाने लिय बाप तो संगम युग पर ही आते है। जिसका ही फिर यादगार भक्ति मार्ग मे मनाते ही आते है। दुशहरा भी तो मनाते हीहै नां। जब बाप आता है तो ही दुशहरा होता है। 5000वर्ष बाद हर बाते रिपीट होती रहती है। तुम बच्चो को ही यह ईश्वरीय मत मिलती है। श्रीमत जिसेस ही श्रेष्ट बनते हो। तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान थी। तो उतरते-2 तमोप्रधान भ्रष्ट बन जाते है। फिर बाप ही आकर ज्ञान और योग सिखा कर सतोप्रधान बनाते है। बताते है कि तुम सीढ़ी से नीचे कैसे उतरते हो। तुम सो देवता थे फिर सो क्षत्री सो... बने। अब फिर खुद से तुम सो ब्राहम्ण बने हो। यह ड्रामा चलता रहता है इसकी आदि मध्य अन्त को कोई भी नही जानते है। बाप ने समझाया है तो अभी तुमको स्मृती आई है। हर एक जन्म की कहानी तो सुना ही नही सकेंगे। लिखी भी नही जाती है जो कि पढ कर सुनाई जा सके। यह बाप बैठ समझाते है कि अब तुम सो ब्राहम्णे बने हो तुम्हे ही सो देवता बन बनना है। बाप ने समझाय है कि ब्राहम्ण, देवता क्षत्रीय तीनो ही धर्म मै ही स्थापन करता हूं। अभी तुम्हारी बुधी मे है कि हम बाप दवारा ब्राहम्ण वंशी बने है। फिर सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी बन ना है। जो-जो नापास होते है वो चन्द्रवंशी बन जाते है। किसमे नापास?---योग मे। ज्ञान तो बहुत ही सहज समझाया है कि कैसे तुम 84जन्मो का चक्र लगाते हो। मनुष्य तो 84लाख कह देते है तो कितना दूर चले गये है। कहते है भक्ति मार्ग के अभी कलयुग 40हजार वर्ष तक और भी चलना है। यहां पर तो तुम कहते हो कि अन्त है। वो सब है मनुष्य मत। तुमको तो मिल रही हैईश्वरिय मत। ईश्वर तो आते ही है एक बार। तो उनकी मत भी एक बार ही मिलेगी नां। एक ही दैवी देवता धर्म था। जरूर उनको उसके आगे ईश्वरिय मत मिली थी। वो तो हुआ संगम युग। बाप आकर दुनियां बदलाते है। तुम अब बदल रहे हो। तुम कहेंगे कि हम कल्प-2 बदलते आये है। बदलते ही रहेंगे। यह चैतन बैटरी है नां। वो तो है जड। बच्चो को पता हुआ है कि हर पांच हजार वर्ष बाद बाप आते है। श्रेष्ट ते श्रेष्ट मत भी देते है। ऊंच ते ऊंच भगवान की ऊंच ते ऊंच मत मिलती है जिसेस ही तुम ऊंच ते ऊंच पद पाते हो। तुम्हारे पास जब भी कोई आते है तो तुम बोलो कि तुम ईश्वर की सन्तान हो नां। ईश्वर ही शिव बाबा है। शिव जयन्ति भी मनाते है। वो है भी सदगति दाता उनकी ही ऊंच मत मिलती है। उनका अपना शरीर तो है ही नही। तो किन दवार दवारा मत देते है। तुम भी आत्मा हो तो इस शरीर दवारा ही तो बात-चीत करते हो नां। शरीर बिना तो आत्मा कुछ भी कर नही सक्ती है। निराकार बाप भी फिर आवे कैसे? गायन भी है कि रथ पर आते है। फिर कोई ने क्या तो कोई ने क्या -2 बैठ बनाया है।---

त्रिमूर्ति भी सूक्ष्म वतन में बैठ दिखाया है। बाप समझाते हैं सूक्ष्मवतन में तो कुछ होता नहीं। यह सब है सा० की बातें। बाकी रचना तो सारी यहां ही है ना। तो रचता बाप को भी यहां आना पड़े। पतित दुनिया में ही आकर पावन बनाना है। यहां बच्चों को डायरेक्ट पावन बना रहे हैं। समझते भी है फिर भी ज्ञान बुधि में बैठता नहीं। कोई को समझाये नहीं सकते। श्रीमत को उठाते हो नहीं तो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ नहीं बन सकते। जो समझते ही नहीं वह क्या पद पावेंगे। फिर यहां का हो या प्रजा का हो। जितना सर्विस करेंगे, बाप ने कहा है हड्डी2 सर्विस में देना है। आलराउन्ड सर्विस करनी है। बाप के सर्विस में हम हड्डी भी देने तैयार हैं। बहुत बच्चियां तो तरफ्ती रहती हैं सर्विस के लिए। बाबा हमको छुड़ाओ तो हम सर्विस में लगजावें जिस से बहुतों को कल्याण हो। सारी दुनिया तो सेवा करती है जिसमानी। उससे तो सीढ़ी नीचे ही उतरते आते हैं। अभी इस रूहानी सेवा से चढ़ती कला होती है। हरेक समझते हैं यह फलानी हमसे जास्ती सर्विस करती है। सर्विसएबुल अच्छी बच्चियां हैं तो सेन्टर भी सम्भाल सकती हैं। क्लास में नम्बरवार बैठते हैं। यहां तो नम्बरवार नहीं बिठाते हैं। फंक हो जावेंगे। समझ तो सकते हैं ना। सर्विस नहीं कर सकते हैं तो जरूर पद भी कम हो जावेगा। पद तो नम्बरवार बहुत हैं ना। परन्तु वह है सुखधाम। यह है दुःखधाम। वहां बिमारी आद कोई होती नहीं। बुधि से काम लेना पड़ता है। समझना चाहिए हम तो बहुत नीच पद पा लेंगे। क्योंकि सर्विस तो करती नहीं हूं। सर्विस से ही पद मिल सकता है। अपनी जांच करनी चाहिए। हरेक अपनी अवस्था को जानते हैं। मामा, बाबा भी सर्विस करते आये हैं। अच्छे2 बच्चे भी हैं, भल नौकरी में हैं उनको कहा जाता है हाफ पे पर भी जाकर सर्विस करो। हर्जा नहीं है। जो बाबा के दिल पर सो बाउसी तख्त पर बैठता है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। ऐसे ही विजय माला में आ जाते हैं। अर्पण भी होते हैं सर्विस भी करते हैं। कोई भल अर्पण होते हैं सर्विस नहीं करते हैं तो पद भी कम हो जावेगा। यह राजधानी स्थापन होती है श्रीमत से। ऐसा कब सुना? अथवा पढ़ाई से राजाई स्थापन होती है। यह कब सुना, कब देखा? हां दान-पुण्य करने से राजा के घर जन्म ले सकते हैं। बाकी पढ़ाई से राजाई पद पाये ऐसा तो कब सुना नहीं होगा। किसको पता भी नहीं। तुम पत्थर बुधि मनुष्यों को बैठ सुनाते हो। तमोप्रधान पत्थर बुधि ही तुम्हारे पास आवेंगे। बाप समझाते हैं तुमने ही 84 जन्म पूरे लिये हैं। तुमको अब ऊपर जाना है। है बहुत ईज़ी। तुम कल्प2 समझते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप याद प्यार भी नम्बरवार पुरुषार्थ ही देते हैं। बहुत याद प्यार उनको देंगे जो सर्विस में हैं। दिल पर भी वही चढ़ते हैं। जो सर्विस नहीं करते हैं वह दिल पर कैसे चढ़ेंगे। अपने से पूछना है हम दिल पर चढ़ा हुआ हूं, माला का दाना बन सकता हूं। अनपढ़े जरूर पढ़े आगे भरी ढोवेंगे। बाप तो समझाते हैं बच्चे पुरुषार्थ करें। परन्तु ड्रामा में पार्ट न है तो फिर कितना भी माथा मारो चढ़ते ही नहीं। कोई न कोई ग्रहचारी लग जाती है। देह अभिमान से ही फिर और सब विकार आ जाते हैं। मुख्य कड़ी बिमारी देह-अभिमान की है। सतयुग में देह-अभिमान नाम ही नहीं होता। वहां तो है ही तुम्हारी प्रालब्ध। यह यहां ही बाप समझाते हैं। और कोई ऐसी श्रीमत देते नहीं कि अपन को आत्मा समझ मामेकं याद करो। यह मुख्य बात है। लिखना चाहिए निराकार भगवान कहते हैं मुझ एक को याद करो। तुम भी निराकार आत्मा हो। अपन को आत्मा समझो। अपने देह को भी याद न करो। जैसे भक्ति में भी शिव की ही पूजा करते हो। अब ज्ञान भी सिर्फ मैं ही देता हूं। बाकी सब है भक्ति। अव्यभिचारी ज्ञान एक ही शिव बाबा से तुमको मिलता है। यह ज्ञान सागर से रत्न निकलते हैं। उस सागर की बात नहीं। यह ज्ञान सागर तुम बच्चों को ज्ञान रत्न रत्न देते हैं जिससे तुम देवता बनते हो। शास्त्रों में तो क्या2 लिख दिया है। सागर से लि देवता निकला फिर रत्न दिया। यह है ज्ञान सागर। तुम बच्चों को रत्न देते हैं। तुम ज्ञान रत्न चुगते हो। आगे पत्थर चुगते थे तो पत्थर बुधि बन पड़े। अभी रत्न चुगने से तुम पारस बुधि बन जाते हो। पारस नाथ बनते हो। यह पारस नाथ (ल०ना०) विश्व के मालिक थे। भक्ति मार्ग में तो अनेक नाम

अनेक चित्र बना रखे हैं। वास्तव में ल०ना० वा पारस नाथ एक ही हैं। नेपाल में पशुपति का मेला क्रो लगता हैं। वह भी पारसनाथ ही हैं। बड़ा सोने का मंदिर हैं। वहां शिव हैं ऊपर में, और ब्रहमा विष्णु, शंकर और चोथा कृष्ण। चार मुख्य दिखाते हो। अर्थ कुछ भी समझते नहीं। पारसनाथ तो वही होगा ना।x जो विव का महाराजा बनेंगे। भक्ति मार्ग में जो कुछ गायन आद करते हैं समझ कुछ भी नहीं हैं। कितना बड़ा मेला लगता हैं। मनुष्य कितना धक्का खाते हैं। अभी तो तुमको धक्के खाने की दरका-र ही नहीं। भक्ति मार्ग के धक्के खाते उतरते ही आये हो। अभी तो तुम चढ़ती कला में जाते हो। सर्व का भला होता हैं। जो भक्ति मार्ग में मेहनत करते हैं बाबा झट सब को पार लगाये देते हैं। कितनी ऊंच पढ़ाई है। तो इसमें इतना ध्यान भी देना चाहिए ना। रात-दिन कैसे बाबा को याद करें। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना हैं। बाबा कहने से ही वुधि एकदम ऊपर चली जाती हैं। फिर बाबा से यह वर्सा मिलता हैं। इस प्रकार युक्ति से किसको समझाने का भी खीर नहीं आता हैं। उछलते नहीं हैं। वह खुशी नहीं रहती। बच्चों को आन्तिरीक खुशी होनी चाहिए। अति-ईन्द्रिय सुख वर्णन करनेप्र आता नहीं है। नहीं तो जाकर सर्विस करे करे। खुद ही नहीं समझते हxतो और को कैसे समझावेंगे। हैं बहुत सहज। किसको भी बोलो तुम सतोप्रधान थे। फिर सीढ़ी उतरते 2 तुम तमोप्रधान बने हो। अब फिर बाप [illegible] द करो [illegible] तुम सतोप्रधान देवता बन जावेंगे। पहले तो अपन को आत्मा समझना हैं। तो बेटरी सतोप्रधान बन जावेंगी। बाप भी समझाते हैं तो यह दादा भी तो समझाते हैं। सब से पहले तो मैं समझा सकता हूं। तब तो इतना ऊंच पद पाता हूं। अगर नहीं सर्विस कर सकते तोबोल देना चाहिए। हम समझा नहीं सकती। ऐसे नहीं कि बिचार कोई समझा नहीं सकते हैं। दो अक्षर सिम्पल ते सिम्पल हैं। चित्रों पर समझाना तो और ही सहज हैं। यह झाड़ हैं, जो ऊपर में लास्ट में खड़ा हैं वह ही अब तपस्य कर रहे हैं। तो जरूर पहले नम्बर ही आवेंगे। बाबा वार2 समझाते हैं फिर भी पत्थर वुधि समझते नहीं। न किसकी रूहानी सेवा कर सकते हैं। सिर्फ यह याद दिलाओ, खाना खाते समय भी एक दो को सावधान कर उन्नति को पाओ। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। फिर याद करे न करे, कानें तक तो आया ना। माया भी कम नहीं हैं। सेकन्ड में भूला देती हैं। फिर कोई को समझा न सके। घड़ी 2 वह याद करने से फिर टेव भी पड़ जावेंगी। बहुत हैं जो याद कर नहीं सकते। बाबा के आगे कह देते है कि हम याद करते हैं। बाबा कहेंगे पाई भी याद नहीं करते हो। अगर याद करते तो सेकड़ों को शिक्षा देते। मुख्य बात भी तो यही समझानी हैं शिव बाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। बाबा फील करते हैं वुधि में बैठता नहीं हैं। याद करते ही किसको तीर लग जाये तो झट समझ जाये, बरोबर बाप तो पतित-पावन हैं। वह ही कहते हैं मुझे याद करो। 84 का चक्र भी समझाया जाता हैं। बाबा युक्तियां तो बहुत बताते रहते हैं ऊपर चढ़ने की। तिलक देते रहो। किसको तिलक देंगे ही नहीं तो राजतिलक कैसे मिलेंगा। सर्विस एबुल बच्चे सर्विस करते रहते हैं तो बल भी मिलता हैं। सर्विस नहीं करते तो कुछ भी बल नहीं मिलता। श्रीमत की ही कमाल हैं। बाकी तो सभी है मनुष्य मत। भगवानुवाच तो एक ही वार होता हैं। कल्प2 बाप आते हैं। जबxर्र बैटरियां पूरी भर जाती हैं तो सब आत्माएं उड़ने लग जाती हैं। पवित्र बनने बिगर तो कोई जा नहीं सके। यह नालेज भी तुमको हैं। बाकी दुनिया में तो कांटे ही कांटे हैं। जिन स्टुडन्ट के लिए समझते हैं नया बल्ड हैं, भारत को सम्भाल करेंगे वह ही पत्थर मारते, कितना हंगाम करते रहते हैं। भाषाओं आद में रखा ही क्या हैं। कितने× कितने प्रकार के दुनिया में विघ्न पड़ते रहते हैं। विघ्न डालने वाले तो मनुष्य ही होते हैं ना। कुछ भी समझ नहीं हैं। अंग्रजी तो बहुत जरूरी हैं। क्योंकि उन द्वारा हो तुम भीख लेते रहते हो। वह देना बन्द करे तो भुख मर जायें। परन्तु यह सब ड्रामा में नुंध हैं। भारत की भी सम्भाल होनी ही हैं। फिर भी बाप कों×××× देश हैं ना। अच्छा× गुडमार्निंग।

एक नया सेन्टर मैसुर में खुला हैं
जिसकी एड्रेस भेज रहे हैः- - -

BRAHMA KUMARIS
1371, IRWIN ROAD,
LASHKAR MOHALLA, MYSORE-1